{وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ} الاسراء: ٨٢

(यह कुरआन जो हम नाज़िल कर रहे हैं मोमिनों के लिए तो सरासर शिफा और रहमत है)

الرقية الشرعية

अर्रूक़िया अश्शरई'आ

(जिन्न, जादू और नज़रे बद का इलाज कुरआनो सुन्नत की रोशनी में)

Arruqiyah Ash-shar-eiyah

الرقيه الشرعية

HEALING FOR BROKEN LIVES

राक़ी मुहम्मद मुहसिन सलफ़ी

मकान नं. 1337/1338, पोस्ट ऑफिस के पास, रामगंज चौपड़, जयपुर

Mob. 9785254147, 9928160191, 9982445841

Scanned by CamScanner

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

الرقيه الشرعية

अर्रूक़िया अश्शरईआ

नाशिर

राक़ी मुहम्मद मुहसिन सलफ़ी

मकान नं. 1337/1338, नियर विजिटेबल मार्केट

पोस्ट आफिस के पास, रामगंज चौपड़, जयपुर (राजस्थान)

मोबाईल नं. 9785254147, 9928160191, 9982445841

Scanned by CamScanner

©

राक़ी मुहम्मद मुहसिन सलफ़ी

- नाम किताब : **अर्रूक़िया अश्शरईआ**
- नाम मुअल्लिफ़ : राक़ी मुहम्मद मुहसिन सलफ़ी
- दूसरी इशाअत : नवम्बर 2016
- सफ़हात : 64
- तादाद : 1000
- तबाअत : अल क़लम कम्प्यूटर्स, रामगंज, जयपुर
- नाशिर : अर्रूक़िया अश्शरिआ सेन्टर, जयपुर

₹ 50/-

ब–एहतमाम:

अर्रूक़िया अश्शरईआ सेन्टर

मकान नं. 1337/1338, नियर विजिटेबल मार्केट
पोस्ट आफिस के पास, रामगंज चौपड़, जयपुर (राजस्थान)
मोबाईल नं. 9785254147,9928160191, 9982445841

Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाह हिर्रहमा निर्रहीम

तक़दीम

सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिसने तमाम मख़लूक़ात को पैदा किया और हर ज़मानो मकान में अपनी तक़दीर का निफाज़ किया, उसके इन्आमात पर हम उसकी हम्दो शुक्र करते हैं।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी का फ़ज़्लो एहसान है, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और रसूल है।

अल्लाह उन पर, उनके आल व अस्हाब और उनकी सच्ची इत्तेबा करने वालों पर रहमत नाज़िल फरमाये।

आमीन या रब्बल आलमीन

✪✪✪

Scanned by CamScanner

इस्लामी भाई व बहन

- क्या आप अपनी ज़िन्दगी में रंजो गम, बेचैनी व तंगी और कसरते मुश्किलात से दोचार है?
- क्या आप किसी जिस्मानी या नफ़सियाती मरज़ से दोचार हैं जिसका आप को इलाज नहीं मिल रहा है?
- क्या आप को अल्लाह की इताअत में सुस्ती और इत्तिबाए ख़्वाहिशात व गुनाह से लगाव महसूस होता है?
- क्या आप अपनी ज़िन्दगी में कुछ अजीबो ग़रीब हरकात महसूस करते हैं जिसका का सबब आपको नहीं मालूम है?
- क्या आप इमान व अख़लाक़ के आला मरतबा पर पहुंचने के ख़्वाहिशमन्द हैं?

इस क़िस्म के बहुत सारे सवालों के जवाबात इन्शा अल्लाह आप को इस किताब में मिलेंगे।

Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाह हिर्रहमा निर्रहीम

मुक़द्दमा

الحمد لله، والصلاة والسلام على رسول الله.

أما بعد.

दौरे हाज़िर में नफ़सियाती, रूहानी और जिस्मानी बीमारी में बड़ा इज़ाफा हुआ है, बहुत सी ऐसी नई बीमारियों का इन्किशाफ हुआ जो पहले ना थी, इन बीमारियों के इलाज के लिए लोगों ने बड़ी कोशिशें कीं, इस में अपना माल और वक़्त बर्बाद क्या। मगर इसके बावजूद दवाख़ाने और डिस्पेंसरियाँ बढ़ती गई और बीमारियों में इज़ाफ़ा ही होता रहा। नहीं है कोई ताक़त और कुव्वत सिवाये अल्लाह के।

यह सब कुछ या उनमें कुछ लोगों की इन बीमारियों से हिफ़ाज़त के तरीकों से ग़फ़लत का नतीजा है, दूसरी जानिब इन बीमारियों से दोचार होने के बाद इनके इलाज के सहीह तरीक़ों से जिहालत और ख़ास तौर पर शरइ झाड़-फूंक की कैफियात से ला इल्मी है।

इसीलिए मैंने यह मुख़्तसर रिसाला तहरीर करने के लिए सोचा ताकि लोगों को बचने के तरीकों की याद दहानी हो और फिर सहीह इलाज कर सकें।

✪✪✪

Scanned by CamScanner

दुआ मोमिन का हथियार है

हर इन्सान अपनी ज़िन्दी में कभी ना कभी ऐसे हालात से यक़ीनन दोचार होता है, जब उसके सारे दुनियावी सहारे टूट जाते हैं, उम्मीदें ख़त्म हो जाती हैं, ज़ाहिरी अस्बाब और वसाइल नाकाम हो जाते हैं। क़रीब तरीन अइज़्ज़ा व अक़ारिब पर एतमाद नहीं रहता हत्ता के भाई भाई के साथ बात नहीं कर सकता, बीवी शौहर के साथ और औलाद अपने वालिदैन के साथ खुलकर बात नहीं कर सकते। गोया सब कुछ होते हुए भी इन्सान तन्हाई, बेबसी और बेकसी का आलम महसूस करता है। तब इन्सान के अन्दर से एक आवाज़ उठती है कि एक सहारा अब भी मौजूद है, एक दरवाज़ा अब भी खुला है जहाँ इन्सान अपने दुख-सुख और मसाइबो आलाम की दास्तान हर वक़्त बयान कर सकता है। इस कैफ़ियत का ज़िक्र ख़ुद अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक में इन अलफ़ाज़ में किया है-

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ

तर्जुमा : "भला कौन है जो बेक़रार की दुआ क़ुबूल करता है जब वह उसे पुकारता है और उसकी तकलीफ़ दूर करता है और ज़मीन में तुम्हें ख़िलाफ़त अता करता है। (यह काम करने वाला) अल्लाह के सिवा कोई और भी है?" (सूरह नमल, आयत : 62)

एक शख़्स रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया : "या रसूलल्लाह! आप हमें किस चीज़ की तरफ़ दावत देते हैं? आप ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह की तरफ़ जो अकेला है, जिसका कोई शरीक नहीं, जब तुम किसी मुश्किल में होते हो तो तुम्हारी मुश्किल कुशाई करता है, जंगलों में राह भूलकर उसे पुकारते हो तो तुम्हारी राहनुमाई

Scanned by CamScanner

करता है, जब तुम्हारी कोई चीज़ खो जाए और उससे माँगो तो तुम्हें वापस लौटा देता है, जब क़हतसाली में उससे दुआएँ माँगो तो मूसलाधार बारिश बरसाता है।" (मुसनद अहमद)

क़ुरआन मजीद ने हमारे सामने अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की बहुत सी मिसालें रखी हैं कि उन्होंने मुसीबत परेशानी और आज़माइश के वक़्त अल्लाह को पुकारा और अल्लाह ने उनकी मुसीबत और तकलीफ़ दूर फ़रमाई।

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम को अज़ाब की ख़बर देकर चले गए, ख़ुद एक भरी हुई कश्ती में सवार हुए। बोझ की ज़्यादती की वजह से क़ुरआ डाला गया तो हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का नाम निकला, चनांचे उन्हें समन्दर में छलांग लगानी पड़ी। जहाँ एक मछली ने अल्लाह के हुक्म से उन्हें निगल लिया, तब हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने अल्लाह को पुकारना शुरू किया-

فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ○ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ط وَكَذٰلِكَ نُنْجِي الْمُؤْمِنِيْنَ

तर्जुमा : "तब यूनुस अलैहिस्सलाम ने हमें तारीकियों में पुकारा, तेरे सिवा कोई इलाह नहीं, तेरी ज़ात पाक है मैं बेशक क़सूरवार हूँ, जब हमने उसकी दुआ क़ुबूल की और उसे ग़म से नजात बख़्शी। मोमिनों को हम इसी तरह नजात देते हैं।" (सूरह अम्बिया, आयत : 87-88)

सूरह साफ़्फ़ात में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं- "अगर यूनुस अलैहिस्सलाम हमें याद न करता तो क़यामत तक मछली के पेट में ही पड़ा रहता।" (आयत नं. 144)

अज़ीज़े मिस्र की बीवी ने हज़र यूसूफ़ अलैहिस्सलाम के हुस्न से मुतास्सिर होकर उन्हें बहुत बड़े फ़ित्ने में डालने की कोशिश की तब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से इल्तिजा की-

Scanned by CamScanner

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَیَّ مِمَّا یَدْعُوْنَنِیْٓ اِلَیْهِ ۚ وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّیْ كَیْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَیْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِیْنَ

तर्जुमा : "यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कहा, मेरे रब! क़ैद मुझे मन्ज़ूर है बनिस्बत इसके कि मैं वह काम करूँ जो यह लोग मुझ से चाहते हैं। अगर तूने इनकी चालों को मुझ से दूर न किया तो मैं उनके जाल में फँस जाऊँगा और जाहिलों में शामिल हो जाऊँगा।" (सूरह यूसुफ़, आयत : 33)

अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की दुआ क़ुबूल फ़रमाई-

فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَیْدَهُنَّ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ

"यूसुफ़ के रब ने उसकी दुआ क़ुबूल की, औरतों की चालें उससे दूर कर दी और यूसुफ़ आज़माइश से बच गए, बेशक वही है जो सबकी सुनता है और जानता है।" (सूरह यूसुफ़, आयत : 34)

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम ने तवील अरसे तक बीमारी में मुब्तिला रहने के बाद अल्लाह तआला से दुआ फ़रमाई-

اَنِّیْ مَسَّنِیَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْنَ

"ऐ मेरे रब! मुझे बीमारी लग गई है और तू रहमान व रहीम है।" (सूरह अम्बिया, आयत :83) अल्लाह तआला ने हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की दुआ क़ुबूल फ़रमाई और सेहत से नवाज़ा। अम्बियाए किराम और अहले ईमान पर दावते हक़ के रास्ते में बड़ी बड़ी कठिन आज़माइशें और परेशानियाँ आईं। क़ौम के लोगों ने किसी को क़त्ल करना चाहा, किसी को संगसार करना चाहा, किसी को जिला वतन करना चाहा, किसी को क़ैद करना चाहा, किसी के हाथ काटने चाहे, तब अहले ईमान ने ज़ालिमों के मुक़ाबले में अल्लाह से मदद और नुस्रत की दुआ की, तो अल्लाह ने उन्हें ज़ालिमों से नजात दिलाई। हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने क़ौम

Scanned by CamScanner

को तौहीद की दावत दी और बदकारी से रोका। क़ौम न मानी और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम को जिला वतन करना चाहा, फ़रिश्ते ख़ूबसूरत लड़कों की सूरत में अज़ाब लेकर आए, तब हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से दुआ की -

رَبِّ نَجِّنِیْ وَاَهْلِیْ مِمَّا یَعْمَلُوْنَ ○

"ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे अहलो अयाल (यानी मेरे पैरूकारों) को क़ौम की बदकारियों से नजात दे।" (सूरह शूरा, आयत : 173)

अल्लाह तआला ने हज़रत लूत अलैहिस्सलाम को उनके अहलो अयाल समेत नजात अता फ़रमाई। फ़िरऔन के दरबार में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और जादूगरों के दर्मियान मुक़ाबला हुआ। जादूगर शिकस्त खा गये और हक़ीक़त मालूम होते ही जादूगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान ले आए। फ़िरऔन ने उन्हें धमकी दी - "मैं तुम्हारे हाथ पाँव मुख़ालिफ़ सिम्तों से कटवा दूँगा और तुम सबको सूली पर लटका दूँगा।" तब जादूगरों ने अल्लाह के हुज़ूर दुआ की-

رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَیْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِیْنَ ○

"ऐ हमारे परवरदिगार! हम पर सब्र का फ़ैज़ान कर और हमें दुनिया से इस हाल में उठा कि हम मुसलमान हों।" (सूरह आराफ़, आयत : 126) इस दुआ के बाद अल्लाह तआला ने अहले ईमान के दिल इस क़दर मज़बूत कर दिये कि उन्होंने भरे दरबार में बादशाह के सामने कह दिया कि

فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ط اِنَّمَا تَقْضِیْ هٰذِهِ الْحَیٰوةَ الدُّنْیَا

"तू जो कुछ करना चाहता है कर ले, तू ज़्यादा से ज़्यादा (हमारी) दुनिया की ज़िन्दगी को ही ख़त्म कर सकता है (इससे ज़्यादा हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता)" (सूरह ताहा, आयत : 72)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का मुकर्रमा

Scanned by CamScanner

में मुसलसल तेरह साल तक मसाइबो आलाम से भरपूर जद्दो-जहद फ़रमाते रहे। बिलआख़िर अहले मक्का के ग़ैर इन्सानी और ज़ालिमाना सुलूक से तंग आकर इस तवक़्क़ो के साथ ताइफ़ तशरीफ़ ले गये कि शायद वहाँ के लोग मेरी बात सुनने पर आमादा हो जायें लेकिन वहाँ आपके साथ जो संगदिलाना सुलूक किया गया उससे आपको शदीद सदमा पहुँचा। आप ज़ख़्मी हालत में ताइफ़ से बाहर क़रनुस्सआलिब के मक़ाम पर पहुँचे, थोड़ी देर आराम फ़रमाया, हवाल बहाल हुए तो अल्लाह तआला के हुज़ूर हाथ फैलाकर यह दर्द अंगेज़ दुआ माँगी। "इलाही अपनी क़ुव्वत की कमी, अपनी बे सरो सामानी और लोगों के मुक़ाबले में अपनी बे बसी की फ़रियाद तुझी से करता हूँ। तू ही मेरा मालिक है, आख़िर मुझे किसके हवाले करने वाला है। क्या उस हरीफ़ बेगाना के, जो मुझ से तुर्शरूई रवा रखता है या ऐसे दुश्मन के जो मेरे मामले पर क़ाबू रखता है लेकिन अगर मुझ पर तेरा ग़ज़ब नहीं है तो फिर मुझे कुछ परवाह नहीं, बस तेरी आफ़ियत मेरे लिए ज़्यादा वुसअत रखती है। मैं इस बात के मुक़ाबले में कि तेरा ग़ज़ब मुझ पर पड़े या तेरा अज़ाब मुझ पर आए, तेरे ही नूर व जमाल की पनाह तलब करता हूँ जिससे सारी तारीकियाँ रौशन हो जाती हैं और जिसके ज़रिए दीनो दुनिया के सारे मामलात सँवर जाते हैं, मुझे तो तेरी रज़ामन्दी और ख़ुशनूदी की तलब है, सिवाए तेरे कहीं से कोई क़ुव्वत व ताक़त नहीं मिल सकती।" (सीरत इब्ने हिशाम, हवाला मुहसिने इन्सानियत)

बज़ाहिर जब तमाम सहारे टूट चुके थे, उम्मीद की कोई किरन दिखाई नहीं देती थी। मक्का और ताइफ़ के सरदारों ने ज़ुल्मो सितम और संगदिली की इन्तिहा कर दी थी। हर तरफ़ यास अंगेज़ फ़िज़ा मुसल्लत थी। आपने अपने ज़ख़्मी और टूटे दिल का हाल एक इन्तिहाई रिक़्क़त अंगेज़ दुआ की शक्ल में मालिके हक़ीक़ी के सामने रख दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

Scanned by CamScanner

यह दुआ अर्शे इलाही से पै दर पै फ़तहो नुसरत की नवैदें लेकर आई। घटा टोप अँधेरों से नूरे सहर के आसार पैदा होने लगे। इसी सफ़र में जिनों की एक जमाअत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बाने मुबारक से क़ुरआन सुनकर ईमान ले आई। मेराजे आसमानी के ज़रिए आपको क़ुर्बे इलाही का इन्तिहाई बुलन्द मुक़ाम अता किया गया, यके बाद दीगरे बैते उक़बा ऊला और बैते उक़बा सानिया अमल में आई जो रोशन मुस्तक़बिल के लिए संगे बुनियाद साबित हुईं।

हक़ीक़त यह है कि ज़िन्दगी में आने वाले मसाइब व आलाम, रन्जो ग़म, और मुश्किलात व मेहन, ख़्वाह इन्फ़िरादी सतह के हों या इज्तिमाई सतह के, इनसे नजात हासिल करने के लिए दुआ से ज़्यादा मुअस्सिर और क़ाबिले एतमाद हथियार कोई नहीं हो सकता जो कशमकशे हयात (ज़िन्दगी) में दुआ के बग़ैर ज़िन्दगी बसर कर रहा है, उसका अन्जाम उस सिपाही से मुख़्तलिफ़ नहीं हो सकता जो घमसान की जंग में हिस्सा लेने के लिए हथियार के बग़ैर मैदाने जंग में घुस जाए।

दुआ के बारे में एक ग़लतफ़हमी का इज़ाला :

क़ुबूलियते दुआ के बारे में बाज़ लोग यह अक़ीदा रखते हैं कि अल्लाह तआला गुनहगार लोगों की दुआ क़ुबूल नहीं करता और बुज़ुर्गों की दुआ कभी रद्द नहीं करता। इस अक़ीदे के नतीजे में जो सूरते हाल पैदा होती है वह यह कि

1. बन्दा अल्लाह से अपने ताल्लुक़ को ख़त्म करके बुज़ुर्गों से मोहताजी का ताल्लुक़ क़ायम कर लेता है।
2. बुज़ुर्गों की ख़ुशनूदी हासिल करने के लिए उनकी ख़िदमत में नज़रो नियाज़ पेश करना ज़रूरी समझता है।
3. दुआएँ क़ुबूल होने के बाद बन्दा बुज़ुर्गों को वही मक़ाम देने लगता है जो अल्लाह तआला का है और यूँ अपनी सारी ज़िन्दगी अल्लाह की बजाए बुज़ुर्गों की बन्दगी में

Scanned by CamScanner

बसर कर देता है।

यह बिल्कुल वहीं सूरते हाल है जो अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में जा बजा मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में मुश्रिकीन के बारे में फ़रमाई है। दर हक़ीक़त यह अक़ीदा रखना कि अल्लाह तआला गुनहगार लोगों की दुआ क़ुबूल नहीं करता, किताबो सुन्नत के सरासर ख़िलाफ़ है। अल्लाह तआला का इरशाद मुबारक है-

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ط اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ○

तर्जुमा : "(लोगो) तुम्हारा रब कहता है कि तुम सब मुझ से दुआ करो, मैं तुम्हारी दुआ क़ुबूल करूंगा, जो लोग मेरी इबादत (दुआ) से तकब्बुर करते हैं (यानी नहीं माँगते) वह ज़लीलो ख़्वार होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे।" (सूरह मोमिन, आयत : 60)

एक हदीस में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे मुबारक है- "जो शख़्स अल्लाह से दुआ नहीं करता, अल्लाह उससे नाराज़ होता है।" (बहवाला तिरमिज़ी) मज़कूरा बाला आयत और हदीस में तमाम मुसलमानों को, ख़्वाह नेक हों या गुनहगार बिला इस्तिस्ना हुक्म दिया है कि अल्लाह तआला से ज़रूर दुआ करो और दुआ न करने वालों को सज़ा का फ़ैसला भी सुना दिया।

अल्लाह के नज़दीक शैतान से ज़्यादा मलऊन और मातूब कोई नहीं हो सकता। उसने खुल्लमखुल्ला अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी की, अल्लाह तआला ने उसे मरदूद क़रार दिया। लेकिन इसके बावजूद जब उसने अल्लाह से दुआ की-

رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ

"ऐ मेरे रब! मुझे क़यामत के दिन तक (लोगों को

Scanned by CamScanner

गुमराह करने की) मोहलत दे।" तो अल्लाह तआला ने उसकी यह दुआ क़ुबूल फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया -

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ إِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ○

"कहा, तुझे मुक़र्रर दिन के वक़्त (यानी क़यामत) तक के लिए मोहलत है।" (सूरह हुजरात, आयत : 36-38)

शैतान की यह दरख़्वास्त किसी नेक मक़सद के लिए ना थी बल्कि बन्दों को गुमराह करने के लिए थी तब भी अल्लाह ने उसकी दुआ रद्द नहीं फ़रमाई। इसके बावजूद यह समझना कि गुनहगारों की दुआ अल्लाह क़ुबूल नहीं फ़रमाता, महज़ शैतानी फ़रेब है। वह ज़ात बा बरकात जो इतनी रहीम व करमी है कि अपने दुश्मनों, बाग़ियों और सरकशों को ज़िन्दगी भर हर तरह की नेमतों से नवाज़ती चली जाती, उनकी सारी ज़रूरतें और हाजतें पूरी करती है तो फिर यह कैसे मुम्किन है कि उसके अपने बन्दे उससे कोई चीज़ माँगें तो वह ना दे?

जिस तरह यह अक़ीदा बातिल है कि अल्लाह तआला गुनहगारों की दुआ क़ुबूल नहीं करता, उसी तरह यह अक़ीदा भी बातिल है कि अल्लाह तआला बुज़ुर्गों की दुआएँ कभी रद्द नहीं करता।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने बेटे को तूफ़ान में ग़र्क़ होते देखा तो अल्लाह तआला से दुआ की -

رَبِّ إِنَّ ابْنِيْ مِنْ أَهْلِيْ وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنْتَ أَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ○

"ऐ मेरे रब! मेरा बेटा मेरे घर वालों में से है और तेरा वादा सच्चा है (लिहाज़ा उसे बचा ले) तू सब हाकिमों से बड़ा हाकिम है।" (सूरह हूद, आयत : 45) अल्लाह तआला ने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की यह दुआ ना सिर्फ़ यह कि रद्द फ़रमा दी बल्कि साथ में यह भी इरशाद फ़रमाया -

Scanned by CamScanner

إِنِّيٓ أَعِظُكَ أَن تَكُونَ مِنَ ٱلْجَٰهِلِينَ ○

"ऐ नूह! मैं तुझे नसीहत करता हूँ कि अपने आपको जाहिलों की तरह न बना ले" (सूरह हूद, आयत : 46)

क़यामत के दिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला से अर्ज़ करेंगे- "ऐ मेरे रब! तूने मुझसे वादा फ़रमाया था कि क़यामत के दिन मुझे रुसवा नहीं करेगा, लेकिन मेरी रुसवाई इससे ज़्यादा क्या हो सकती है कि मेरा बाप तेरी रहमत से महरूम है।" अल्लाह तआला इरशाद फ़रमायेगा - "मैंने जन्नत काफ़िरों के लिए हराम कर दी है।" चुनांचे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ख़्वाहिश को रद्द करते हुए अल्लाह तआला हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वालिद को बिज्जू बनाकर जहन्नम में डाल देगा। (बुख़ारी)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत के लिए तीन दुआएँ कीं। (1) मेरी उम्मत क़हत से हलाक ना हो। (2) मेरी उम्मत ग़र्क़े आम से हलाक ना हो। (3) मेरी उम्मत में ख़ाना जंगी ना हो। अल्लाह तआला ने पहली दो दुआएँ क़ुबूल फ़रमा लीं, लेकिन तीसरी दुआ क़ुबूल नहीं फ़रमाई। (मुस्लिम)

पस यह समझना कि अल्लाह तआला किसी नबी, वली या बुज़ुर्ग की दुआ कभी रद्द नहीं करता बिल्कुल बातिल अक़ीदा है। सही इस्लामी अक़ीदा यह है कि -

अव्वलन हर शख़्स को अपने लिए ख़ुद अल्लाह तआला से दुआ माँगनी चाहिए क्योंकि यह अल्लाह तआला का वाज़ेह हुक्म है जबकि किसी नेक आदमी से दुआ करवाना जाइज़ तो है लेकिन इसका हुक्म कहीं नहीं दिया गया है। सानियन क़ुबूलियते दुआ का इन्हिसार मुकम्मल तौर पर अल्लाह तआला की मर्ज़ी और मसलिहत पर है, वह जब चाहे, जिसकी चाहे और जितनी चाहे दुआ क़ुबूल करे, जिसकी चाहे रद्द करे।

Scanned by CamScanner

तावीज़ गंडे के ख़तरात और शैतानी असरात

जब मोमिन बन्द के दिल में अपने परवरदिगार से मुताल्लिक़ यह बात बैठ जाये कि यक़ीनन अल्लाह तआला ही पूरी बादशाही का मालिक है। वह अपनी बादशाही में जिस तरह चाहे तसर्रुफ़ करता है, पूरी कायनात में कोई भी उसके हुक्म के बिना किसी मामले की तदबीर की ताक़त नहीं रखता, मख़्लूक़ की परेशानियाँ उसी के हाथ में हैं, वह जो चाहता है हो जाता है और जो नहीं चाहता नहीं होता, तब बन्दा लोगों के साथ अपने तमाम ताल्लुक़ात ख़त्म करके सिर्फ़ एक अल्लाह तआला पर भरोसा रखता है जैसाकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया -

وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ

"और अल्लाह पर जो भरोसा रखता है, उसके लिए अल्लाह तआला काफ़ी है।" (सूरह तलाक़ : 3)

जो शख़्स इस मर्तबे को पहुँच गया वह सबसे बहादुर लोगों में होता है, वह किसी भी मख़्लूक़ से नहीं डरता, सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला भी वही होता है इसलिए कि उसका ताल्लुक़ दुनिया के परवरदिगार के साथ होता है। लोगों के हाथों में जो कुछ है उस से वह बेज़ार होता है, क्योंकि वह जानता है कि अल्लाह तआला ही सब बातों की तदबीर करता है, फिर वह अल्लाह तआला ही की ओर रुजूअ करता है इसलिए कि उसे यह मालूम है कि मख़्लूक़ के सारे मामलात की तदबीर अल्लाह तआला ही करता है।

कुछ कमज़ोर ईमान लोग यह अक़ीदा रखकर ग़लती करते

Scanned by CamScanner

हैं कि कुछ मख़्लूक़ भी चाहे वह नबी हों या वली, कायनात के अन्दर तसर्रुफ़ करते हैं, वह नफ़ा पहुँचाते हैं और मुसीबतों को टालते हैं या यह एतिक़ाद रखते हैं कि वली और पीर वग़ैरह किसी को धागा या तावीज़ और गंडा वग़ैरह देकर नफ़ा नुक़सान पहुँचाने की ताक़त रखते हैं जैसाकि कोई तावीज़ इस मक़सद से पहनता है कि उसके यहाँ औलाद पैदा हो, या बिच्छू का ज़हर दूर हो जाए, या शैतान के ख़ौफ़ से महफ़ूज़ रहे, या किसी से मुहब्बत हो जाए या किसी से नफ़रत करने लगे वग़ैरह। इस तरह के लोग दो तरह की ग़लतियों में मुब्तिला होते हैं।

1. वह यह अक़ीदा रखने लगते हैं कि अल्लाह के अलावा भी कोई नफ़ा और नुक़सान का मालिक है जबकि यह अक़ीदा रखना अल्लाह तआला के साथ शिर्क है। अल्लाह तआला का फ़रमान है-

قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖۤ اَوْ اَرَادَنِيْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ

"आप उनसे कहिए कि अच्छा यह तो बताओ जिन्हें तुम अल्लाह के अलावा पुकारते हो, अगर अल्लाह तआला मुझे नुक़सान पहुँचाना चाहे तो क्या यह उसके नुक़सान को हटा सकते हैं? या अल्लाह तआला मुझ पर मेहरबानी का इरादा करे तो क्या यह उसकी मेहरबानी को रोक सकते हैं? आप कह दीजिए कि अल्लाह मुझे काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं।" (सूरह ज़ुमर : 38)

और अगर इसके सिवा वह एतिक़ाद रखें कि ग़ैरुल्लाह ख़ुद नफ़ा नुक़सान का मालिक तो नहीं मगर नफ़ा नुक़सान के लिए सबब और ज़रिआ है। तो यह बिना किसी दलील के अल्लाह

Scanned by CamScanner

तआला के ऊपर इलज़ाम लगाना है, आख़िर इस की क्या दलील है कि वह अल्लाह की तरफ़ से ज़रिआ है। इसलिए अगर किसी ने बिना किसी शरई या हिस्सी दलील के (जैसे मेडिकल दवाओं की शरीअत ने इजाज़त दी है) किसी चीज़ को सबब या बरकत की वजह समझा तो उसने अल्लाह के साथ शिर्के असग़र का गुनाह किया।

2. ऐसे काम करने से ग़ैरुल्लाह के साथ ताल्लुक़ बनता है और जिसने ग़ैरुल्लाह के साथ ताल्लुक़ बनाया उसे उसी के हवाले कर दिया जाता है और जो ग़ैरुल्लाह के हवाले कर दिया जाए वह हक़ीक़त में कमज़ोरी, लाचारी और ज़िल्लत के हवाले कर दिया जाता है।

तावीज़ गंडे की हुरमत हदीसों की रोशनी में -

बहुत ज़्यादा ऐसी हदीसें हैं जिनमें तावीज़ वग़ैरह लटकाने से मना किया गया है, चाहे वह क़ुरआनी आयात ही के क्यों न बने हों। इसलिए इमाम अहमद और अबू दाऊद ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद र.अ. से रिवायत किया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया -

إِنَّ الرُّقَى وَالتَّمَائِمَ وَالتِّوَلَةَ شِرْكٌ.

"यक़ीनन" झाड़-फूँक, तावीज़ और मियाँ-बीवी के बीच मुहब्बत पैदा करने के लिए किसी चीज़ को पहनना शिर्क है। (अल्लामा अलबानी रह. ने इसकी सनद को सही कहा है, सिलसिला सहीहा : 2972)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अक़ीम ने बयान किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि

مَنْ تَعَلَّقَ شَيْئاً وُكِلَ إِلَيْهِ.

Scanned by CamScanner

"जो शख़्स कोई चीज़ गले वग़ैरह में लटकाये तो उसे उसी के हवाले कर दिया जाता है।" (तिर्मिज़ी, अहमद, सही)

तावीज़ लटकाने वाले के ऊपर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बद्दुआ फ़रमाई है कि अल्लाह तआला ऐसे आदमी की दुआ पूरी ना करे और उसे अराम व सुकून हासिल ना हो। हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ि.अ. ने बयान किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया -

مَنْ تَعَلَّقَ تَمِيْمَةً فَلَا أَتَمَّ اللهُ لَهُ وَمَنْ تَعَلَّقَ وَدَعَةً فَلَا وَدَعَ اللهُ لَهُ

"जिसने तावीज़, मनका वग़ैरह लटकाया अल्लाह उसकी दुआ पूरी ना करे और जिस ने कोई सीप बाँधी अल्लाह उसे भी आराम और चैन ना दे।" (इस हदीस को इमाम अहमद और अबू याला ने रिवायत किया है, इमाम हाकिम रह. ने इसे सही इस्नाद कहा है और इमाम ज़हबी ने ताईद की है।)

इमाम अहमद और तिर्मिज़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अक़ीम रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया -

مَنْ تَعَلَّقَ تَمِيْمَةً فَقَدْ أَشْرَكَ.

"जिस ने तावीज़ लटकाया उसने शिर्क किया।" (इसे इमाम हाकिम रह. ने भी रिवायत किया है और उसके रावी सिक़ा हैं)

इसी तरह इमाम अहमद ने हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक शख़्स के हाथ में पीतल का बना कड़ा देखा तो पूछा : यह क्या है? उसने जवाब दिया कि यह कमज़ोरी से बचने

Scanned by CamScanner

के लिए है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

أَنْزِعْهَا فَإِنَّهَا لَا تَزِيدُكَ إِلَّا وَهْنًا فَإِنَّكَ لَوْ مُتَّ وَهِيَ عَلَيْكَ مَا أَفْلَحْتَ أَبَدًا۔

"इसे उतार कर फेंक दो, इसलिए कि यह कमज़ोरी ही में बढ़ोतरी करेगा, और अगर इसे पहने हुए तेरी मौत हो गई तो तू कभी कामयाब नहीं हो सकता।"

तावीज़ और गण्डे सहाबा किराम, ताबिईन और उलमाए किराम की नज़र में-

इब्ने अबी हातिम ने हज़रत हुज़ैफ़ा बिन अल-यमान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि उन्होंने एक आदमी के हाथ में बुख़ार से बचने के लिए एक धागा बंधा हुआ देखा तो उन्होंने उसे काट दिया और क़ुरआन मजीद की यह आयत तिलावत फ़रमाई-

وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ إِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ○

"इन में से अकसर लोग अल्लाह पर ईमान रखने के बावजूद भी मुश्रिक ही हैं।" (सूरह यूसुफ़ : 106)

इमाम अहमद ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की अहलिया हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से एक रिवायत बयान की है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद जब किसी काम को ख़त्म करके अपने घर लौटते तो दरवाज़े पर पहुँचकर ज़रूर खाँसते, ताकि मैं ख़बरदार हो जाऊँ और अपनी हालत सँभाल लूँ। एक बार वह ऐसे वक़्त घर पर आए जब मेरे पास एक बूढ़ी औरत बैठी हुई थी, वह मुझे हमरता (एक क़िस्म की बीमारी है जिसमें लाल दाने निकल आते हैं और बहुत बुख़ार आता है) से ठीक होने के लिए झाड़-फूँक कर रही थी, अब्दुल्लाह

Scanned by CamScanner

के खाँसने की आवाज़ सुनकर मैंने उसे चारपाई के नीचे छिपा दिया। हज़रत अब्दुल्लाह घर में आए और मेरे बग़ल में बैठ गए, उनकी नज़र मेरे गले में लटके धागे पर पड़ गई। उन्होंने तअज्जुब से पूछा, यह कैसा धागा है? मैंने जवाब दिया कि इस धागे में मेरे लिए झाड़-फूँक की गई है, उन्होंने उसे काटकर फेंक दिया और कहा यक़ीनन अब्दुल्लाह का ख़ानदान शिर्क से पाक है, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना -

إِنَّ الرُّقَى وَالتَّمَائِمَ وَالتِّوَلَةَ شِرْكٌ.

"यक़ीनन झाड़-फूँक, तावीज़ गंडे और मियां बीवी के बीच मुहब्बत पैदा करने के लिए किसी चिज़ को पहनना शिर्क है।"

हज़रत ज़ैनब कहती हैं कि इस पर मैंने कहा: आप तो ऐसा कहते हैं पर एक बार मेरी आँखें फड़कने लगीं, मैं फ़लाँ यहूदी के पास झाड़-फूँक के लिए जाती थी, जब वह झाड़-फूँक करता तो आँखों की फड़फड़ाहट ख़त्म हो जाती। हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा यह तो शैतान का काम है, वह तेरी आँखों में अपना हाथा चुभो देता और झोड़-फूँक करने पर छोड़ देता, तेरे लिए तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बताई हुई यह दुआ काफ़ी थी-

اَللّٰهُمَّ رَبَّ النَّاسِ، مُذْهِبَ الْبَاْسِ، اشْفِ اَنْتَ الشَّافِي إِلاَّ اَنْتَ الشَّافِيُ لَا شَافِيَ إِلَّا اَنْتَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَماً.

"ऐ लोगों के परवरदिगार! बीमारी दूर करने वाले, शिफा दे, तू ही शिफ़ा देने वाला है, तेरे सिवा कोई शिफ़ा देने वाला नहीं है, शिफ़ा तेरी ही है, ऐसे शिफ़ा दे जो किसी बीमारी को रहने ना दे।"

इमाम मुंज़री रह. 'तमायम' के बारे में फ़रमाते हैं यह एक

Scanned by CamScanner

क़िस्म का धागा और दाना वग़ैरह होता था, जिसे लोग मुसीबतें दूर करने के लिए पहनते थे जबकि यह जिहालत और गुमराही है, क्योंकि एक अल्लाह के अलावा कोई मुसीबत और दुख से बचाने वाला नहीं है।

अबू अल-सादात रह. फ़रमाते हैं : 'तमायम' तमीमह की जमा है, यह एक तरह के पत्थर के दाने होते थे, जिन्हें अरब अपनी औलाद के गलों में बुरी नज़र और आफ़ात से बचने के अक़ीदे से पहनाया करते थे इसलिए इस्लाम ने उस अक़ीदे को ग़लत कहा है।

अबू उबैद रह. फ़रमाते हैं - अरब के लोग ऊँटों के गलों में तांत (चमड़े की बटी हुई रस्सी) लटकाते थे ताकि उन्हें जादू और बुरी नज़र ना लगे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें तांत वग़ैरह काटकर फेंक देने का हुक्म दिया और ख़बरदार किया कि तांत, धागा वग़ैरह अल्लाह तआला के हुक्म का ज़रा भी नहीं टाल सकता। इसी तरह के कुछ काम टैक्सी और ट्रक ड्राइवर वग़ैरह करते हैं, वह काले रंग के प्लास्टिक के पट्टे या धागे अपनी गाड़ियों के साथ इस हालत में लटकाते हैं कि यह चीज़ें उन्हें हादसात, तकलीफ़ या परेशानी वग़ैरह से महफ़ूज़ रखेंगे, मगर इस तरह के काम भी शिर्क हैं क्योंकि जिन चीज़ों को अल्लाह ने हादसात से बचने का सबब नहीं बनाया, उन्हें हम सब बना रहे हैं।

Scanned by CamScanner

नफ़्सियाती बीमारियाँ और उनका इलाज

इंसान की जिसमानी बीमारियों के इलाज में दवाओं, जड़ी बूटियों और ऑप्रेशनों पर तवज्जा दी, और अल्लाह पर इमान, उस से ताल्लुक और क़ुरआन करीम व ज़िक्र व दुआ के ज़रिए इलाज को फरामुश कर दिया। जिस से इंसान को रूहानी कुव्वत मिलती है और जिस से इंसान खूद को बहुत सी नफ़्सियाती और जिस्मानी बीमारियों में पड़ने से बचा सकता है या इनमें पड़ने के बाद बआसानी इन से निजात हासिल कर सकता है।

इसी लिए आप देखेंगे कि एक मुसलमान जिसके अन्दर इमान व तक़्वा होता है वह अकसरो बेशतर इन बीमारियों से महफ़ूज़ होता है। उसे दली सुकून रहता है, ख़ूश व ख़ुर्रम और पुर उम्मीद होता है, भले ही इसकी ज़िन्दगी में मादी तंगी हो और कुछ मुआश्रती मुशकिलात वग़ैरा से दो चार हो, जिस से कोई भी शख़्स महफ़ूज़ नहीं रहता।

दूसरी जानिब आप देखेंगे कि जब उसे कोई बीमारी होती है तो सब से पहले मशरूई इमानी दवाओं से इलाज करता है और किताबो सुन्नत से अख़ज़ करता है, फिर अल्लाह की हलाल कर्दा दिगर तिब्बी सहुलियात अपनाता है। जिन का असर और नफ़ा साबित है, इन दोनों दवाओं के मजमूऐ से उसे दुनिया की आफियत भी अल्लाह के हुक्म से हासिल होती है और आखिरत में अजर भी। इन्शा अल्लाह मिलेगा।

इस लिए हम मुसलमान इमानी तक़्वीयत के इन्तेहाई ज़रूरतमन्द हैं ताकि अमनो अमान की ज़िन्दगी गुज़ार सकें। और

Scanned by CamScanner

सआदत व दिली इतमिनान हासिल हो।

इस से मालूम होता है कि इन बीमारियों से बचने और शिफायाब होने का तरीक़ा दो मरहलों से गुज़रता है:

पहला मरहला : हिफाज़त और बचाव का मरहला, एक मुस्लिम मर्द व औरत, छोटे व बड़े के लिए यह इन्तेहाई अहम है, इस के लिए हम सब को इस की ख़्वाहिश करना चाहिये क्योंकि यह अल्लाह के हुक्म से बहुत सी बीमारियों के दफा और बचाव में मददगार है। जैसा कि कहा जाता है : बचाव इख्तेयार करना इलाज से बहेतर है।

दूसरा मरहला : इलाज है, यानी बीमारी से दो चार होने के बाद उसे ख़त्म करने के लिए इलाज करना, और यह शरइ झाड़ फूंक और दीगर नफसियाती और तिब्बी इलाजात के ज़रिए बीमारियों को दूर करना।

इन दोनों मरहलों की तफसील आप के सामने पेश की जा रही है :

बीमारियों से नफ़्स का बचाव

एक मुसलमान का इस्लामी तालीमात और इस के क़ौली व फेली आदाब का पाबन्द होना और हर रोज़ उसे अपनी ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ हिस्सों में नाफ़िज़ करना ख्वाह इस का ताल्लुक इबादत से हो या अख़लाक़ियात व इज्तेमाईयत वगैरा से और अल्लाह ने जिन इबादात व इताअत का हुक्म दिया है उन्हें बजा लाना और तमाम ना फरमानियों और हराम कर्दा चीज़ों से बचना, यह तमाम चीज़ें अल्लाह के हुक्म से दिली सुकून की ज़ामिन हैं और नफस को तमाम नफसियाती रूहानी और जिस्मानी मरज़ से बचा सकती हैं।

इस लिए इस्लाम ने हमें तमाम तालीमात और आदाब, दुआओं और अज़्कार को अपनाने की दावत दी है, जब हम

Scanned by CamScanner

उसके मुकम्मल तौर पर पाबन्द हो जायेंगे तो इन्शा अल्लाह नफसियाती बीमारियों से हमारी हिफाज़त के लिए ढाल बनेंगे, और शैतानी वसवसों और ज़िन्दगी के मुशिलात से बचाव करेंगे। और इस दुनिया में मुसलमान की सआदत और इतमीनान व वक़ार के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने का सबब बनेंगे।

बाज़ अहम वज़ाइफ़ व अज़कार दर्ज ज़ैल है :

1. तमाम वाजिबात पर अमल करना, ख़ास तौर पर मर्दों के लिए पांचों वक़्त की नमाज़ें, मस्जिद में बा जमाअत इतमेनान व खुशूअ के साथ अदा करना।
2. तमाम गुनाहों और ना फरमानियों से दूर रहना, इन से तौबा करना छोटे बड़े गुनाहों से बचना खास तौर पर इस ज़माना में जिसका बहुत से लोग इरतेकाब करते हैं यानी गाने और मियूज़िक सुनना, फिल्म और गन्दे डरामे देखना जो दिल में इमान को कमज़ोर कर देते हैं और निफाक़ पैदा करते हैं। और ऐसे शख्स पर जिन्नात व शैयातीन को मुसल्लत कर देते हैं।
3. पाबन्दी के साथ रोज़ कुरआन करीम की तिलावत करना।

सुबह व शाम के अज़कार

(1) सूरह इखलास, सूरह फलक़ सूरह नास (फजर व मग़रिब के बाद तीन तीन बार) (अबू दाऊद 5082)

(2) अल्लाहुम्मा अन्त रब्बी ला इलाहा इल्ला अन्ता खलक़तनी व अना अ़बदुका व अना अला आहदिका व वादिका मसतताअ़त, आ-ऊजुबिका मिन शर्रि मा सनाअत, अबूऊ लका बिनिअ़मतिका अलय्या व अबूऊ बिज़म्बी फग़फिरली फइन्नहु ला याग़फिरुज़्ज़ुनूबा इल्ला अन्त। (बुखारी-6306) (फजर व मग़रिब के बाद एक बार)

Scanned by CamScanner

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَا اِلٰهَ اِلاَّ اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰی عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَااسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَاصَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَاِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلاَّ اَنْتَ۔

(3) बिस्मिल्लाह-हिल्लज़ी ला यदुर्रू म-अ इस्मिही शैउन फिल अर्दि वला फिस-समाई व हुवस-समीउल अलीम (फजर व मगरिब के बाद तीन बार) (अबू दाऊद 5077)

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ۔

(4) आ-ऊज़ु बि-कलिमातिल्लाहि-ताम्माति मिन शर्रि मा खलक़। (मग़रिब के बाद तीन बार) मुसनद अहमद 2/290)

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ۔

(5) सुबहान-अल्लाहि व बिहमदिहि (फजर और मग़रिब के बाद 100 बार) (मुस्लिम 2692)

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ۔

(6) अस्तग़फिर-उल्लाह व अतूबु इलैहि (दिन में 100 बार) (मुस्लिम 2702)

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ۔

(7) ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू, लहुल मुल्क व लहुल हम्द, वहुवा अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर (फजर के बाद 100 बार) (बुखारी -3293)

لَا اِلٰهَ اِلاَّ اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰی

Scanned by CamScanner

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ۔

(8) अल्लाहुम्मा सल्ली व सल्लिम अला नबी-ईना मुहम्मद (फजर व मग़रिब के बाद 10 बार)(अलबानी सही अल-तरग़ीब व तरहीब 1/293)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ

सोते वक्त के अज़कार

नोट: सोने से पहले वुजु ज़रूर कर लें।

(1) दोनों हथेलियाँ मिलाकर (सूरह इखलास, सूरह फलक़ और सूरह नास) पढ़कर इन पर थुथकारना और हाथ को सर, चेहरा और जिस्म के सामने के हिस्से से शुरू करते हुऐ जहाँ तक मुम्किन हो तीन बार फेरें। (बुखारी 5017)

(2) आयतल कुर्सी पढ़ें। (बुखारी 2311)

(3) सूरह बक़रह की आखिरी दो आयतें (आयत नं.285 व 286) पढ़े। (मुस्लिम 807)

(4) सूरह मुल्क (सूरह नं.67) पूरी पढ़ें। (अलबानी सहीहुल जामे व सगीर 4/255)

(5) अल्लाहुम्मा क़िनी अज़ाबका यौमा तबअसु इबादका (3 बार) (मुस्लिम 2711)

اَللّٰهُمَّ قِنِيْ عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ

(6) अल्लाहुम्मा बिस्मिका अमूतु वा अहया। (बुखारी 6324)

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيَا۔

(7) सुबहान अल्लाह سُبْحَانَ اللّٰهِ (33 बार)

अल-हम्दु लिल्लाह اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ (33 बार)

Scanned by CamScanner

अल्लाहु अकबर اَللّٰهُ اَكْبَرُ (34 बार) (बुखारी5327)

(8) बिस्मिका रब्बी वज़ाअतु जन्बी व बिका अरफउहु, इन असकनतु नफसी फरहमहा वइन अरसलतहा फहफज़्हा बिमा तहफ़ज़ा बिही इबादिकास्सालिहीन।(सोते वक्त बिस्तर साफ करके पढ़ें।)(बुखारी 6320)

بِاسْمِكَ رَبِّيْ وَضَعْتُ جَنْبِيْ وَبِكَ اَرْفَعُهٗ، اِنْ أَمْسَكْتَ نَفْسِيْ فَارْحَمْهَا وَاِنْ أَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهٖ عِبَادِكَ الصَّالِحِيْنَ۔

फर्ज़ नमाज़ के बाद के अज़्कार

(1) अल्लाहु अकबर اَللّٰهُ اَكْبَرُ (1 बार)

(2) अस्तग़फिरुल्लाह اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ (3 बार)

(3) अल्लाहुम्मा अन्तस्सलामु व मिनकस्सलामु तबारकता या ज़लजलालि वल इकराम। (मुस्लिम 591)

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ۔

(4) ला इलाहा इल्लल्लाहु वाहदहू ला शरीका लहू, लहुल मुल्क व लहुल हम्द, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर, अल्लाहुम्मा ला मानिअ़ा लिमा अअ़तैता वला मुअ़तिया लिमा मनअ़ता वला यनफऊ ज़ल जद्दि मिनकल जद्द। (बुखारी 844, मुस्लिम 593)

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ۔ اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ۔

Scanned by CamScanner

(5) ला इलाहा इल्लल्लाहु वाहदहू ला शरीका लहू, लहुल मुल्क व लहुल हम्द, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर, ला होऊला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाहु वला नअ़बुदु इल्ला इय्याहु, लहुन्नेअ़मतु वलहुल फ़ज़्लु वलहुस्सनाऊल हसन, ला इलाहा इल्लल्लाहु मुख्लिसीना लहुद्-दीना वलऊ करिहल काफिरून। (मुस्लिम 594)

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ. لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ. لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ. لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا نَعْبُدُ اِلَّا اِيَّاهُ. لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ.

(6)
- सुबहान अल्लाह (سُبْحَانَ اللّٰه 33 बार)
- अल-हम्दु लिल्लाह (اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ 33 बार)
- अल्लाहु अकबर (اَللّٰهُ اَكْبَر 33 बार)
- ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू, लहुल मुल्क व लहुल हम्द, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर (1 बार) (मुस्लिम 897)

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ. لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ. (حديث)

(7) **आयतलु कुर्सी:**

अल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवल हई-उल क़य्यूम, ला ता खुजुहु सिनतुवँ वला नऊम, लहु मा फिस-समावाति व मा फिल अर्द, मन ज़ल्लज़ी यशफऊ इन्दहु इल्ला बिइज़्निह, यालमु मा बयना अैदिहिम व मा खलफहुम वला युहीतूना

Scanned by CamScanner

बि-शैइम मिन इल्मिही इल्ला बिमा शाआ, व सियाकुर्सिहुस -समावाति वल अर्द, वला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा, व हुवल अ़लीय्युल अज़ीम।(निसई 100)

آیۃ الکرسی : اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَا یَؤُدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ۔

(8) **सूरह इख़लास:**

कुल हुवल्लाहु अहद, अल्लाहुस्समद, लम यलिद वलम यूलद वलम यकुल्लहु कुफुवन अहद (1 बार)

سورۃ اخلاص : قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ○ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ○ لَمْ یَلِدْ ○ وَلَمْ یُوْلَدْ ○ وَلَمْ یَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ○

(9) **सूरह फलक़:**

कुल आऊज़ु बि-रब्बिल फलक़, मिन शर्रि मा खलक़, व मिन शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब, व मिन शर्रिन नफ्फासाति फिल उक़्द। (1 बार)

سورۃ فلق : قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ○ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ○ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ○ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ○ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ○

(10) **सूरह नास:**

कुल अऊज़ु बि-रब्बिन-नासि, मलिकिन्नास, इलाहिन्नास,

Scanned by CamScanner

मिन शर्रिल वसवासिल खन्नास, अल्लज़ी युवसविसु फी सुदूरिन-नास, मिनल जिन्नति वन्नास।(1 बार)(अबू दाऊद-1523)

سورۃ ناس: قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ○ مَلِكِ النَّاسِ ○
اِلٰهِ النَّاسِ ○ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ○ الَّذِیْ
یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ○ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ○

रूक़िया क्या है?

रूक़िया से मुराद कुरआनी आयात, मुश्किलात से पनाह मांगने वाली दुआऐं और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित शुदा दुआओं का मजमूआ हैं जिसे मुस्लिम अपने ऊपर या बीवी बच्चों पर किसी नफसियाती मरज़ के इलाज़ के लिए पढ़ता है, और जिन्नात व इंसानों की नज़रे बद से बचने के लिए या शैतानी वसवसा, जादू और दूसरी जिसमानी बीमारियों से शिफायाबी के लिए पढ़ता है।

यही शरई रूक़िया है, यह जादू या शोबदा बाज़ी नहीं जैसा कि बाज़ लोग समझते हैं न ही कोई ना पसन्दीदा बिदअत है जिस की दीन में कोई असल ना हो।

इसलिए लोगों के ज़ेहनों में जब रूक़िया का यह ग़लत महदूद मतलब पैदा हुआ तो इलाज और शिफा की तलाश में या तो जादूगरों, शोबदा बाज़ों और दज्जालों की तरफ मुतवज्जा हुये, हालांकि मुसलमान के अक़ीदा के मुताबिक यह कितना ख़तरनाक है यह किसी से पोशीदा नहीं, या लोगों ने अपनी मुख़्तलिफ़ बीमारियों का इलाज तरक़ कर दिया जिस की वजह से उन्हें

Scanned by CamScanner

तक्लीफ़ हुई और ऐसे बुरे आसार इनकी ज़िन्दगी में रूनुमा हुये जिसे अल्लाह ही जानता है, यह सब जिहालत और इन बीमारियों में रूक़्या की फायदे को मामूली समझने की वजह से हुआ।

रूक़िया की मशरूईयत

यह चीज़ साबित है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रूक़िया का हुक्म दिया, ख़ूद भी किया और इस पर लोगों को बरकरार रखा, इस की बहुत सारी दलीलें हैं:

1. आयश रज़ियल्लाहु अन्हा का क़ौल है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब कोई शिकायत होती तो अपने ऊपर पढ़ कर फूंकते, जब आप की बीमारी ने शिद्दत इख़्तेयार कर ली तो मैं आप पर पढ़ती और हुसूल बरकत के लिए आप ही का दाहिना हाथ आप के जिसम पर फेरती (मुस्लिम)

2. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान

   "لا بَأسَ بِالرُّقَى مَالَمْ تَكُنْ شِرْكاً" (مسلم)

   (रूक़िया अगर शिर्क ना हो तो इस में कोई हर्ज नहीं)

3. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद

   "مَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ أَنْ يَّنْفَعَ أَخَاهُ فَلْيَفْعَلْ" (مسلم)

   (जो शख़्स अपने भाई को फायदा पहुंचा सकता हो वह फायदा पहुंचाये)

4. उस लौण्डी के लिए जिसके चेहरे में पिलापन (ज़रदी) थी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान :

   "اِسْتَرْقُوا لَهَا فَإِنَّ بِهَا النَّظْرَةَ" (بخاری)

   (इस पर रूक़िया करो क्योंकि उसे नज़र बद लग गई है)

Scanned by CamScanner

5. आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का क़ौल है नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे नज़र बद झाड़ने का हुक्म देते थे (मुस्लिम)

6. क्या रूक़िया किसी मख़सूस मुतअयन मरज़ के लिए है?

ज़हन में यह बात आ सकती है कि रूक़िया, नज़र बद, जादू और शैतानी वसाइस वगैरा के लिए ख़ास है, दूसरी जिस्मानी, नफसियाती या रूहानी बीमारियों में इस की कोई तासीर या नफा नहीं, यह बात दुरूस्त नहीं बल्कि यह रूक़िया के मुतालिक ग़लत तसव्वुर है जिस की तसहीह ज़रूरी है ताकि अपनी तमाम मानवी बीमारियों के इलाज में इस से फायदा उठा सकें।

रूक़िया की तमाम बीमारियों में फायदे पर कुरआन व हदीस की बहुत सारी दलीलें मौजूद हैं, यह किसी खास बीमारी के साथ ख़ास नहीं, चन्द दलीलें दर्ज ज़ैल है :

कुरआनी दलीलें

कुरआन करीम में बहुत सारी आयात हैं जो बहुत सी बीमारियों में रूक़िया के फायदे पर दलालत करती हैं मसलन :

अल्लाह तआला का फरमान :

﴿ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَّشِفَآءٌ ﴾ فصلت ۴۴

आप कह दीजिए! कि यह तो ईमान वालों के लिए हिदायत व शिफा है (सूरह फुस्सिलत : 44)

﴿ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴾ الاسراء ۸۲

यह कुरआन जो हम नाज़िल कर रहे हैं मोमिनों के लिए तो सरासर शिफा और रहमत है (सूरह इसरा : 82)

यहाँ (मिन) बयान जिन्स के लिए है, ऐसी सूरत में मुकम्मल कुरआन शिफा है जौसा कि इस आयत में है, अल्लाह तआला का इरशाद है :

Scanned by CamScanner

﴿يَاأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ شِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ﴾ یونس ۵۷

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से एक ऐसी चीज़ आई है जो नसीहत है और दिलों में जो रोग हैं उन के लिए शिफा है और रहनुमाई करने वाली है और रहमत है ईमान वालों के लिए (सूरह यूनुस : 57)

सुन्नते नबी की दलीलें

1. जिबरईल अलैहिस्सलाम का रूक़िया करना, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये तो कहा : मुहम्मद आप के तकलीफ़ है? फरमाया : हाँ, जिबरईल ने कहा :

"بِسْمِ اللهِ أَرْقِيكَ مِن كُلِّ شَيْءٍ يُّؤْذِيكَ، مِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ أَوْ عَيْنٍ حَاسِدٍ، اللهُ يَشْفِيكَ، بِاسْمِ اللهِ أَرْقِيكَ" (مسلم)

(हर चीज़ की तक़लीफ से अल्लाह का नाम लेकर आप को रूक़िया करता हूँ, हर नफ़्स की बुराई और हर हसद करने वाली आंख से, अल्लाह आपको शिफा दे, अल्लाह के नाम से आप को रूक़िया करता हूँ)

जिबरईल का फरमान : ''مِن كُلِّ شَيْءٍ يُّؤْذِيكَ'' तमाम बीमारियों में रूक़िया की उमूमियत का फायदा देता है।

2. उस्मान बिन अबी अलआस सक़फी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शिकायत की कि इस्लाम लाने के बाद बराबर उनके जिस्म में दर्द रहता है, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अपना हाथ जिस्म में दर्द की जगह पर रखो और (बिसिमल्लाह) तीन बार कहो, और सात मरतबा कहो :

Scanned by CamScanner

"أَعُوذُ بِعِزَّةِ اللهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَاذِرُ" (احمد)

(अपनी तमाम बीमारियों से अल्लाह की इज्ज़त व कुदरत की पनाह चाहता हूँ)

इसी तरह और दूसरी हदीसें भी वारिद हैं जिनका इस मुख़्तसर रिसाला में हम ज़िक्र नहीं कर सकते, दौरे हाज़िर में बाज़ जिस्मानी बीमारियों में रूक़िया पर हमें तअज्जुब होगा, या यह कि रूक़िया से क्या इस में भी कुछ फायदा हो सकता है? लेकिन बुख़ार का रूक़िया, बिछ्छू के ढंक मारने पर, पेशाब रूकने, जख़्म और दर्द सर वगैरा का रूक़िया इस की बरकत पर दलालत करता है इसी से तमाम बीमारियों में इसके फायदा बख्श होने पर दलालत हो रही है। (ज़ादुल माद, इब्ने कैइम स. 18-149, जिल्द 4)

रूक़िया का फायदा कब होता है?

इस सवाल का जवाब देना बड़ा अहम है क्योंकि कोई आदमी कभी खूद अपना रूक़िया करता है या दूसरों का करता है, मगर मुतवक्के असर, या जल्द शिफा नहीं पाता, इस वक़्त इसके दिल में रूक़िया की फायदे के मुतालिक शक पैदा होता है और बिजा सवाल करता है : जो लोग इस रूकिया के फायदे के कायल हैं उन की बात कहाँ गई, मैने खूद अपना रूक़िया किय मगर मरज़ में कोई शिफायाबी नहीं दिखी और ना हालत में कोई तब्दीली आई?

इस क़िस्म के सवालात का जवाब देते हुये इब्ने कैइम रह. फरमाते हैं : यहाँ एक बारीकी है जिसे समझना ज़रूरी है वह यह है कि कुरआनी आयात, अज़कार, दुआऐं जिनका शिफा के लिए रूक़िया किया जाता है बिला शुब्हा यह बज़ाते खूद नफा बख़्श और बाइसे शिफा है। मगर इनकी क़बूलियत और असर अमल करने वाले की कुव्वत की मुतक़ाजी है, तो जब भी शिफा में देर

Scanned by CamScanner

हो तो यह फायल के तासीर में कमी या मुन्फइल की अदमे क़बूलियत की वजह से होता है या किसी और कवी माने के सबब जो दवा की कामयाबी से माने होता है । (अल जवाबुल काफी, इब्ने कैइम स. 38)

फिर दूसरी जगह ज़ादुल माद में फरमाया : रूक़िया से इलाज करने के लिए दो चीज़ें चाहिये : एक चीज़ मरीज़ की तरफ से दूसरी चीज़ इलाज करने वाले की तरफ से, मरीज़ की जानिब से कुव्वत नफस और अल्लाह की तरफ सच्चा लगाव होना चाहिये और इस बात का पुख्ता यकीन कि कुरआन करीम मोमिनों के लिए बाइस शिफा और रहमत है और सहीह तरीक़ा से दुआ कराना जिस पर ज़बान व दिल का इत्तेफाक़ हो, क्योंकि रूक़िया एक किस्म की लड़ाई है और लड़ाई करने वाला बग़ैर दो चीज़ों के कामयाब नहीं हो सकता।

अव्वल : बज़ाते खूद हथियार उम्मदा हो।

दोम : कलाई और बाजू ताक़तवर हो।

जब भी इन में से कोई चीज़ कमज़ोर होगी तो हथियार का कोई ख़ास फायदा नहीं होगा। फिर अगर दोनों चीज़ें कमज़ोर हों तो क्या होगा? जब दिल तौहीद, तवक्कुल, तक़वा और अल्लाह की तरफ तवज्जेह से खाली हो, फिर कहाँ कोई हथियार रह गया। इसी तरह मुआलिज की जानिब से भी दोनों चीज़ें होनी चाहियें (कुरआन व सुन्नत) (ज़ादुल माद, इब्ने कैइम 4/54)

रूहानी और नफसियाती बीमारियों की अलामतें

1. अल्लाह के ज़िक्र और इताअत से एराज़ करना, ख़ास तौर पर नमाज़ से दूर रहना।
2. दायमी दर्द सर जिस का कोई जिस्मानी सबब ना हो।

Scanned by CamScanner

3. सख़्त गुस्सा के हालात कि इंसान अपने इरादा व ज़बान पर कन्ट्रोल से बाहर हो जाये।
4. ज़हनी इन्तेशार।
5. ग़ैर फितरी तौर पर कसरत निसयान।
6. सख़्त काहिली के साथ में पूरे जिस्म में थकावट महसूस करना।
7. रात में नीन्द का उचाट हो जाना और बअसानी नींद ना आना।
8. हमेशा ग़म व इज़तिराब और तंग दिली महसूस करना।
9. बिला वजह रोना या हंसना।
10. डरावने ख़्वाब देखना।
11. ज़्यादा शर्माना, और लोगों से तन्हाई पसन्द करना।
12. घर में या अहलो अयाल के साथ बैठने को ना पसन्द करना, या उन के साथ सख़्ती से पेश आना और घरेलू मशाकिल का बहुत ज़्यादा रूनुमा होना।
13. इंसान का नाकामी में पड़ना जबकि कामयाबी इस का शेवा था।
14. जिस्म के किसी हिस्सा में किसी खास मरज़ का पैदा होना जिस में मॉर्डन दवाऐं या नफसियाती इलाज कार गर ना हों, जैसे कैंसर, जिसम की अैठन वगैरा।

आप अपना इलाज ख़ूद कर सकते हैं

मेरे प्यारे भाई व बहनो! अगर अपनी ज़िन्दगी में रूक़िया के फायदे के कायल हैं तो आप को किसी के पास जाने की ज़रूरत नहीं कि वह आप को रूकिया करे बल्कि आप बज़ाते

Scanned by CamScanner

खूद अपना रूक़िया कर सकते हैं।

अव्वल : अल्लाह तआला पर तवक्कुल का आला दर्जा यही है कि आप शिफा और सेहत व आफियत सिर्फ अल्लाह से तलब करें, क्योंकि यह दुआ की एक किस्म है।

दोम : इंसान का अपना रूक़िया ख़ूद करना इख़लास का ज़्यादा बाइस है और अल्लाह की तरफ इल्तिजा व आजिज़ी इस में ज़्यादा पाई जाती है, इसी लिए इस में नफा ज़्यादा होता है और अल्लाह के हुक्म से शिफा जल्द मिलतीहै।

सोम : यह रात व दिन में हर वक़्त आप के पास मौजूद होता है जबकि दूसरे रूक़िया करने वालों का ख़ास वक़्त होता है और इनके पास आने जाने में दिली तंगी महसूस होती है और माल व वक़्त की बर्बादी अलग से होती है।

हाँ अलबत्ता वह शख़्स जिस की कोई ख़ास हालत हो या किसी मरज़ से वह आजिज आ चुका हो तो उसे किसी क़ाबिले एतमाद रूक़िया करने वाले के पास जाना चाहिये ताकि बहुक्मे रब्बी मरज़ से शिफायाबी में उसकी मदद कर सके।

अर्रूक़िया अश्शरईया

(शरई झाड़ फूंक)

यहाँ कुछ कुरआनी आयतें और मसनून दुआऐं बतौर इख्तिसार ज़िक्र की जाती हैं जो मुसिबत या मरज़ के होने पर इज़ाला और इलाज के लिए पढ़ी जाती हैं, इसके साथ मज़कूरा मुसीबत आने से पहले नफ़्स की हिफ़ाज़त के लिए मुख़्तलिफ़ आमाल और अज़कार का पाबन्द भी होना चाहिये जो शख़्स किसी ख़ास मरज़ के इलाज के लिए मज़ीद मालूमात चाहे तो उसे रूक़िया की मुस्तनद किताबों की तरफ रूजू करना चाहिये।

Scanned by CamScanner

दुआए शिफ़ा

(1) अ़ऊ़ज़ु बिल्लाहिस समीईल अलीम मिनश्-शैतानिर-रजीमि मिन हमज़िही व नफखिही व नफ़सिही (सही बुखारी)

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ مِنْ هَمْزِهٖ وَنَفْخِهٖ وَنَفْثِهٖ۔

(2) अ़ऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित-ताम्मति मिन ग़दबिही व इक़ाबिही व शर्रि इबादिही व मिन हमज़ातिश शैयातीनि व अंय यहदुरून। (सहीहुल जामे 701)

أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهٖ وَعِقَابِهٖ وَشَرِّ عِبَادِهٖ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَأَنْ يَّحْضُرُوْنَ۔

(3) अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित-ताम्मति मिन कुल्लि शैतानिन व हाम्मति व मिन कुल्लि ऐनिल लाम्माह। (बुखारी 3371)

أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَّهَامَّةٍ وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَامَّةٍ۔

(4) बिस्मिल्लाहि अरकीका मिन कुल्लि शैइनं यूज़िका मिन शर्रि कुल्लि नफसिन औ ऐनिन हासिदिन, अल्लाहु यशफीका बिस्मिल्लाहि अरक़ीक। (मुस्लिम 2186)

بِسْمِ اللّٰهِ أَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُّؤْذِيْكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ أَوْ عَيْنٍ حَاسِدٍ اَللّٰهُ يَشْفِيْكَ بِسْمِ اللّٰهِ أَرْقِيْكَ۔

(5) बिस्मिल्लाहि तुर्बतु अर्दिना बिरीक़ति बादिना लियुशफा सक़ीमुना बिइज़नि रब्बना। (बुखारी 5745)

Scanned by CamScanner

بِسْمِ اللهِ تُرْبَةُ اَرْضِنَا بِرِيْقَةِ بَعْضِنَا لِيُشْفٰى سَقِيْمُنَا بِاِذْنِ رَبِّنَا۔

(6.) सूरह इखलास, सूरह फलक़, सूरह नास (मुकम्मल पढ़ें।) (बुखारी-5749)

(7) अल्लाहुम्मा रब्बन-नासि अज़्हबिल बासा वशफि अन्तश-शाफि, ला शिफाआ इल्ला शिफाउका शिफाअल ला युग़ादिरू सक़मा। (बुखारी 5733)

اَللّٰهُمَّ رَبَّ النَّاسِ اَذْهِبِ الْبَأْسَ وَاشْفِ اَنْتَ الشَّافِيْ
لَا شِفَاءَ اِلَّا شِفَائُكَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا۔

(8) हस्बुनल्लाहु व नेअ़मल वकील। (बुखारी-4563)

حَسْبُنَا اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ۔

(9) असअलुल्लाहल अज़ीमा रब्बल अ़र्शिल अज़ीम अयँ यशफीक। (सहीहुल अदब 416)

اَسْأَلُ اللهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَنْ يَّشْفِيَكَ۔

(10) अल्लाहुम्मा आफिनी फी बदनि अल्लाहुम्मा आफिनी फि समई, अल्लाहुम्मा आफिनी फि बसरी ला इलाहा इल्ला अन्त। (अबू दाऊद 4245)

اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَدَنِيْ اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ سَمْعِيْ اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ
بَصَرِيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ۔

(11) ला इलाहा इल्ला अन्ता सुब्हानका इन्नी कुन्तु मिनज़ जालिमीन। (तिर्मिज़ी 3/443)

لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ۔

(12) इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन अल्लाहुम्मा अजिरनी फि मुसीबति वखलफ लि खैरम मिन्हा। (मुस्लिम 918)

Scanned by CamScanner

اِنَّالِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ، اَللّٰھُمَّ اَجِرْنِیْ فِیْ مُصِیْبَتِیْ وَاخْلُفْ لِیْ خَیْرًا مِّنْھَا۔

13. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फरमान है कि जिस्म के जिस हिस्से में तकलीफ हो उस पर अपना हाथ रखो और तीन दफा कहो: बिस्मिल्लाह और सात दफा कहो:

اَعُوْذُ بِاللّٰہِ وَقُدْرَتِہٖ مِنْ شَرِّ مَا اَجِدُ وَاُحَاذِرُ۔

अऊज़ुबिल्लाहि व कुदरतिही मिन शर्रि मा अजिदु व उहाज़िरु। (मुस्लिम 2202)

रूक़िया नं.1

जादू का असर ज़ाइल करने के लिए कुरआनी आयात

(۱) أَعُوْذُ بِاللّٰہِ السَّمِیْعِ الْعَلِیْمِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ○ بِسْمِ
اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ○ الرَّحْمٰنِ
الرَّحِیْمِ ○ مٰلِكِ یَوْمِ الدِّیْنِ ○ اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَاِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ
○ اِھْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ
عَلَیْھِمْ ○ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْھِمْ وَلَا الضَّآلِّیْنَ ○
الفاتحہ ۱-۷۔

(۲) الٓمّٓ ○ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَیْبَ فِیْهِ ھُدًی لِّلْمُتَّقِیْنَ ○ الَّذِیْنَ
یُؤْمِنُوْنَ بِالْغَیْبِ وَ یُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوۃَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰھُمْ

Scanned by CamScanner

يُنْفِقُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ○ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ○ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ○ البقرة ۵-۱۔

(۳) وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰهُ مَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ وَ لَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ○ البقرة ۱۰۲۔

(۴) وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ج لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۔ اِنَّ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِىْ تَجْرِىْ فِى الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ص وَّ تَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ (سورہ بقرہ :۱۶۳۔۱۶۴)

Scanned by CamScanner

(۵) اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَا یَؤُدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ○ البقرة ۲۵۵۔

(۶) اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَیْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ لَا نُفَرِّقُ بَیْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَیْكَ الْمَصِیْرُ لَا یُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَیْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِیْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَیْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَی الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَی الْقَوْمِ الْكٰفِرِیْنَ ○ البقرة ۲۸۶-۲۸۴۔

(۷) الٓمّٓ ○ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ○ نَزَّلَ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰةَ وَالْاِنْجِیْلَ ○ مِنْ قَبْلُ هُدًی لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِیْدٌ وَاللّٰهُ عَزِیْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ○ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَخْفٰی عَلَیْهِ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ ○ آل عمران ۵-۱۔

(۸) اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِیْ سِتَّةِ اَیَّامٍ

Scanned by CamScanner

(۸) اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِیْ سِتَّةِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ یُغْشِی الَّیْلَ النَّهَارَ یَطْلُبُهٗ حَثِیْثًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍ م بِاَمْرِهٖ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ○ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْیَةً اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُعْتَدِیْنَ ○ وَلَا تُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِیْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِیْنَ ○ الأعراف ۵۶-۵۴۔

(۹) وَاَوْحَیْنَآ اِلٰی مُوْسٰٓی اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ فَاِذَا هِیَ تَلْقَفُ مَا یَاْفِكُوْنَ ○ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ○ فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَ انْقَلَبُوْا صٰغِرِیْنَ ○ وَ اُلْقِیَ السَّحَرَةُ سٰجِدِیْنَ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ رَبِّ مُوْسٰی وَ هٰرُوْنَ۔ الأعراف ۱۱۹-۱۱۷۔

(۱۰) وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِیْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِیْمٍ ○ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓی اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ○ فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰی مَا جِئْتُمْ بِهِ السِّحْرُ اِنَّ اللّٰهَ سَیُبْطِلُهٗ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِیْنَ ○ وَیُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ○ یونس ۸۲-۷۹۔

(۱۰) وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِیْنَ وَلَا یَزِیْدُ الظّٰلِمِیْنَ اِلَّا خَسَارًا ○ الاسراء ۸۲۔

(۱۲) قَالُوْا یٰمُوْسٰٓی اِمَّآ اَنْ تُلْقِیَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰی ○ قَالَ

Scanned by CamScanner

بَلْ اَلْقُوْا فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَ عِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ○ فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ○ قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ○ وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُ حَيْثُ اَتٰى ○

طٰہٰ ۶۹-۶۵۔

(۱۳) اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ○ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ○ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ○ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ○ المؤمنون ۱۱۸-۱۱۵۔

(۱۴) يٰسٓ ○ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ○ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ○ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ○ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ○ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ○ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ○ اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ○ وَجَعَلْنَا مِنْ م بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ○ يس ۹-۱۔

(۱۵) وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ○ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ○ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ○ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ○ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ

Scanned by CamScanner

الْمَشَارِقِ ○ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ نِ الْكَوَاكِبِ ○ وَ
حِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ○ لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى
وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ○ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ○
اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ○
الصافات ۱۰-۱۔

(۱۶) وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ فَلَمَّا
حَضَرُوْهُ قَالُوْٓا اَنْصِتُوْا فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ
○ قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْ م بَعْدِ مُوْسٰى
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ
○ يٰقَوْمَنَآ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ
ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ○ وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ
اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ
اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ○ الأحقاف ۳۲-۲۹۔

(۱۷) يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ
اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا
بِسُلْطٰنٍ ○ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا
شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ○ الرحمٰن ۳۵-۳۳۔

(۱۸) لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ

Scanned by CamScanner

خَشْيَةِ اللهِ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَفَكَّرُوْنَ ○ هُوَ اللهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عٰلِمُ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ○ هُوَ اللهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
الْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ
الْمُتَكَبِّرُ سُبْحٰنَ اللهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ○ هُوَ اللهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ
الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○ الحشر ۲۴-۲۱۔

(۱۹) تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرُ ○ الَّذِیْ
خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا وَهُوَ
الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ○ الَّذِیْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا مَا تَرٰى فِیْ
خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ○
ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ
حَسِيْرٌ ○ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا
رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ وَلِلَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ط وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۔ الملك ۶-۱

(۲۰) قُلْ اُوْحِیَ اِلَیَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا
قُرْاٰنًا عَجَبًا ○ يَّهْدِیْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ
اَحَدًا ○ وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ○ وَّ
اَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللهِ شَطَطًا ○ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ

Scanned by CamScanner

تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ○ وَّ اَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ○ وَّ اَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ○ وَّ اَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّ شُهُبًا ○ وَّ اَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ○ الجن ۹-۱۔

(۲۱) اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ

(۲۲) قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ○ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ○ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ ○ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ○ الاخلاص ۴-۱۔

(۲۳) قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ○ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ○ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ○ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ○ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ○ الفلق ۵-۱۔

(۲۴) قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ○ مَلِكِ النَّاسِ ○ اِلٰهِ النَّاسِ ○ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ○ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ○ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ○ الناس ۶-۱۔

Scanned by CamScanner

रुकिया नं.2

आशिक़ जिन से हिफ़ाज़त के लिए क़ुरआनी आयात

(۱) أَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَسَآءَ سَبِيْلًا ○ بنی اسرائیل ۳۲۔

(۲) اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ ○ الزخرف ۶۷۔

(۳) وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُوْنَ كَمَا فُعِلَ بِاَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ اِنَّهُمْ كَانُوْا فِيْ شَكٍّ مُّرِيْبٍ ○ السبا ۵۴۔

(۴) فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ○ المریم ۵۹۔

(۵) اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ○ تَنْزِعُ النَّاسَ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ○ القمر ۲۰-۱۹۔

(۶) وَرَاوَدَتْهُ الَّتِيْ هُوَ فِيْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّيْٓ اَحْسَنَ مَثْوَايَ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ○ الیوسف ۲۳۔

(۷) وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ○ اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ○ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ○ المعارج ۳۱-۲۹۔

Scanned by CamScanner

(۸) قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَیَّ مِمَّا یَدْعُوْنَنِیْٓ اِلَیْهِ وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّیْ كَیْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَیْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِیْنَ فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَیْدَهُنَّ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ○

الیوسف ۳۴-۳۳۔

(۹) وَاِذَا تَوَلّٰی سَعٰی فِی الْاَرْضِ لِیُفْسِدَ فِیْهَا وَ یُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ وَاللّٰهُ لَا یُحِبُّ الْفَسَادَ ○ وَاِذَا قِیْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ وَ لَبِئْسَ الْمِهَادُ ○

البقرہ ۲۰۶-۲۰۵۔

(۱۰) وَمِنَ النَّاسِ مَنْ یَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا یُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ وَلَوْ یَرَی الَّذِیْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ یَرَوْنَ الْعَذَابَ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِیْعًا وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ الْعَذَابِ ○ البقرہ ۱۶۵۔

(۱۱) اَلزَّانِیَةُ وَالزَّانِیْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ص وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِیْ دِیْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ وَلْیَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِیْنَ ○

النور ۲۔

(۱۲) یَوْمَ یَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ قِیْلَ ارْجِعُوْا وَرَآئَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا فَضُرِبَ بَیْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ بَاطِنُهٗ فِیْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ

Scanned by CamScanner

قِبَلِهِ الْعَذَابُ ○ الحدید ۱۳۔

(۱۳) وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلاً ○ يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِيْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلاً ○ لَقَدْ اَضَلَّنِيْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِيْ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ○ الفرقان ۲۹-۲۷۔

(۱۴) يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَآئَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْئًا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ وَلَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○ الممتحنة ۱۲۔

(۱۵) وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ○ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ○ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ○ الفرقان ۷۰-۶۸۔

(۱۶) اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ

Scanned by CamScanner

اَخْدَانٍ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ
مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ المائدہ۵۔

(۱۷) وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ
الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ
الْمُؤْمِنٰتِ وَ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ
فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ
مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ فَاِذَآ اُحْصِنَّ
فَاِنْ اَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ
الْعَذَابِ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ
لَّكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ النساء۲۵۔

(۱۸) وَ يَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ
الْاِنْسِ وَقَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا
بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝
الانعام۱۲۸۔

रूक़िया नं. 3

हिफ़ाज़ते हमल और बांझपन के लिए क़ुरआनी आयात

(۱) اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِي
الْاَرْحَامِ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا وَمَا تَدْرِيْ

نَفْسٌ بِاَیِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌ خَبِیْرٌ ○ لقمان ۳۴۔

(۲) وَاِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُئِلَتْ ○ بِاَیِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ○ تکویر ۹-۸۔

(۳) وَالَّذِیْنَ یَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّیّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْیُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِیْنَ اِمَامًا ○ الفرقان ۷۴۔

(۴) یٰاَیُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِیْ رَیْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَیْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَیِّنَ لَكُمْ وَنُقِرُّ فِی الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰٓی اَجَلٍ مُّسَمًّی ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ وَمِنْكُمْ مَّنْ یُّتَوَفّٰی وَمِنْكُمْ مَّنْ یُّرَدُّ اِلٰٓی اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَیْلَا یَعْلَمَ مِنْ بَعْدِ عِلْمٍ شَیْئًا وَتَرَی الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَیْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِیْجٍ ○ الحج ۵۔

(۵) اَللّٰهُ یَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰی وَمَا تَغِیْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ وَكُلُّ شَیْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ○ الرعد ۸۔

(۶) یٰاَیُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِیْرًا وَّنِسَآءً وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَیْكُمْ رَقِیْبًا ○ النساء ۱۔

(۷) فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّیْ وَضَعْتُهَآ اُنْثٰی وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا

Scanned by CamScanner

وَضَعَتْ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى وَاِنِّيْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّيْٓ
اُعِيْذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○ آل عمران ۳۶۔

(۸) وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ
يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا
وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ
دَرَجَةٌ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ○ البقرہ ۲۲۸۔

(۹) فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً قَالُوْا لَا تَخَفْ وَ بَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ
عَلِيْمٍ ○ الذاریات ۲۸۔

(۱۰) وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ كُلًّا هَدَيْنَا وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ
قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى
وَهٰرُوْنَ وَ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ○ الانعام ۸۴۔

(۱۱) هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً
طَيِّبَةً اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ○ فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ
يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ
مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ○ قَالَ رَبِّ
اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ قَالَ
كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ○ آل عمران ۴۰-۳۸۔

(۱۲) قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ ط قَالَ كَذٰلِكِ

Scanned by CamScanner

اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ○ آل عمران ۴۷۔

(۱۳) يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ اسْمُهٗ يَحْيٰى لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا○ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا○ قَالَ كَذٰلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْئًا○ مریم ۹-۷۔

(۱۴) وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ○ اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا قَالَ اِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُوْنَ○ قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ○ قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ عَلٰٓى اَنْ مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ○ قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقَانِطِيْنَ○ الحجر ۵۵-۵۱۔

(۱۵) وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ○ لقمان ۱۴۔

(۱۶) وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ اِحْسَانًا حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَبَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰهُ وَ اَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ اِنِّيْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاِنِّيْ مِنَ

Scanned by CamScanner

الْمُسْلِمِيْنَ○ الاحقاف ۱۵۔

(۱۷) وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا○ الاسراء ۲۳۔

(۱۸) مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ○ مِنْ نُّطْفَةٍ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ○ ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ○ ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ○ ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ○ الاسراء ۲۲-۱۸۔

(۱۹) قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ اِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ذٰلِكُمْ وَصّٰكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ○ الانعام ۱۵۔

(۲۰) وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ○ فاطر ۱۱۔

(۲۱) قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ○ الانعام ۱۴۰۔

Scanned by CamScanner

(۲۲) وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ○ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ
نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ○ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا
الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا
ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ ○ ثُمَّ
اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ○ المؤمنون ۱۵-۱۲۔
(۲۳) وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ وَاَحْيَا ○ وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى
○ مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ○ وَاَنَّ عَلَيْهِ النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ○
النجم ۴۸-۴۴۔
(۲۴) اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ○ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ○
فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ○ اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى
اَنْ يُّحْيِ یَ الْمَوْتٰى ○ القيامة ۴۰-۳۸۔
(۲۵) قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ○ قَالَتْ اَنّٰى
يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ○ قَالَ
كَذٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً
مِّنَّا وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ○ مريم ۲۱-۱۹۔
(۲۶) اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ
مُّبِيْنٌ ○ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ قَالَ مَنْ يُّحْيِ
الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ○ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ اَنْشَاَهَآ اَوَّلَ مَرَّةٍ
وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمٌ ○ سورہ یٰس ۷۹-۷۷۔

Scanned by CamScanner

रुकिया नं. 4

कुरआनी दुआएं

(१) أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ○ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○ الفاتحه ۷-۱۔

(۲) رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ○ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ○ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ○ البقرة ۱۳۷-۱۲۷۔

(۳) الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ○ البقرة ۱۵۶۔

(۴) رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ○ البقرة ۲۰۱۔

(۵) رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ○ البقرة ۲۵۰۔

(۶) رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ○ البقرة ۲۸۶۔

Scanned by CamScanner

(۷) رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْلَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ○ آل عمران۱۶۔

(۸) رَبِّ هَبْ لِیْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّیَّةً طَیِّبَةً اِنَّكَ سَمِیْعُ الدُّعَآءِ○ سورہ آل عمران۳۸۔

(۹) رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِیْنَ○ سورہ آل عمران۵۳۔

(۱۰) رَبَّنَا اغْفِرْلَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِیْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَی الْقَوْمِ الْكٰفِرِیْنَ○ سورہ آل عمران۱۴۷۔

(۱۱) حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِیْلُ○ سورہ آل عمران۱۷۳۔

(۱۲) رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلاً سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ○ رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَیْتَهٗ وَمَا لِلظّٰلِمِیْنَ مِنْ اَنْصَارٍ○ رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِیًا یُّنَادِیْ لِلْاِیْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ○ رَبَّنَا فَاغْفِرْلَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَیِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ○ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰی رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا یَوْمَ الْقِیٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ○ سورہ آل عمران۱۹۴-۱۹۱۔

(۱۳) رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِیْنَ○ المائدہ۸۳۔

(۱۴) رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْلَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ○ الأعراف۲۳۔

(۱۵) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هَدٰنَا لِهٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِیَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰنَا اللّٰهُ ○ الأعراف۴۳۔

(۱۶) رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ○ الأعراف۴۷۔

Scanned by CamScanner

(۱۷) رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّ تَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ○ الأعراف ۱۲۶

(۱۸) حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ○ التوبه ۱۲۹۔

(۱۹) رَبِّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُبِكَ اَنْ اَسْئَلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ وَاِلَّا تَغْفِرْلِيْ وَتَرْحَمْنِيْٓ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ○ الهود ۴۷۔

(۲۰) وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ○ الهود ۸۸۔

(۲۱) فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ○ يوسف ۶۴۔

(۲۲) فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ○ يوسف ۱۰۱۔

(۲۳) رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ○ ابراهيم ۴۰۔

(۲۴) رَبَّنَا اغْفِرْلِيْ وَ لِوَالِدَيَّ وَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ○ ابراهيم ۴۱۔

(۲۵) وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ○ اسراء ۸۰۔

(۲۶) رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ○ سوره كهف ۱۰۔

(۲۷) رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ○ وَيَسِّرْلِيْٓ اَمْرِيْ ○ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ ○ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ○ طه ۲۸-۲۵۔

(۲۸) رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ○ طه ۱۱۴۔

(۲۹) اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ○ انبياء ۸۳۔

Scanned by CamScanner

(۳۰) لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ○ انبیاء ۸۷۔

(۳۱) رَبِّ لَا تَذَرْنِیْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَیْرُ الْوٰرِثِیْنَ○ انبیاء ۸۹۔

(۳۲) رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰی مَا تَصِفُوْنَ○ انبیاء ۱۱۲۔

(۳۳) وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُبِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّیٰطِیْنِ○ وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ یَّحْضُرُوْنِ○ المؤمنون ۹۸-۹۷۔

(۳۴) رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْلَنَا وَ ارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَیْرُ الرّٰحِمِیْنَ○ المؤمنون ۱۰۹۔

(۳۵) وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَیْرُ الرّٰحِمِیْنَ○ المؤمنون ۱۱۸۔

(۳۶) رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا○ اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا○ الفرقان ۶۶-۶۵۔

(۳۷) رَبِّ هَبْ لِیْ حُكْمًا وَّاَلْحِقْنِیْ بِالصّٰلِحِیْنَ○ وَاجْعَلْ لِّیْ لِسَانَ صِدْقٍ فِی الْاٰخِرِیْنَ○ وَاجْعَلْنِیْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِیْمِ○ الشعراء ۸۵-۸۳۔

(۳۸) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ فَضَّلَنَا عَلٰی كَثِیْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِیْنَ○ النمل ۱۵۔

(۳۹) رَبِّ اَوْزِعْنِیْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِیْٓ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ وَعَلٰی وَالِدَیَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰهُ وَاَدْخِلْنِیْ بِرَحْمَتِكَ فِیْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِیْنَ○ النمل ۱۹۔

(۴۰) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰی عِبَادِهِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی○ النمل ۵۹۔

(۴۱) رَبِّ هَبْ لِیْ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ○ الصافات ۱۰۰۔

(۴۲) رَبِّ اَوْزِعْنِیْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِیْٓ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ وَعَلٰی وَالِدَیَّ وَاَنْ

Scanned by CamScanner

اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰهُ وَ اَصْلِحْ لِیْ فِیْ ذُرِّیَّتِیْ اِنِّیْ تُبْتُ اِلَیْكَ وَاِنِّیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ○ الأحقاف ۱۵۔

(۴۳) رَبَّنَا اغْفِرْلَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِیْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِیْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِیْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ○ الحشر ۱۰۔

(۴۴) رَبَّنَا عَلَیْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَیْكَ اَنَبْنَا وَاِلَیْكَ الْمَصِیْرُ○ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْلَنَا رَبَّنَا اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ○ الممتحنة ۵-۴۔

(۴۵) رَبَّنَا اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْلَنَا اِنَّكَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ○ التحریم ۸۔

(۴۶) رَبِّ اغْفِرْلِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَیْتِیَ مُؤْمِنًا وَّ لِلْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِیْنَ اِلَّا تَبَارًا○ النوح ۲۸۔

(۴۷) سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا یَصِفُوْنَ○ وَ سَلٰمٌ عَلَی الْمُرْسَلِیْنَ ○ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ○ الصافات ۱۸۲-۱۸۰۔

रूकिया नं. 5

नज़रे बद से हिफ़ाज़त के लिए कुरआनी आयात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ○ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ○ مٰلِكِ یَوْمِ الدِّیْنِ○ اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَاِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ○ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ○ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ○ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ وَلَا الضَّآلِّیْنَ○ سورہ فاتحہ

Scanned by CamScanner

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

مَثَلُهُمۡ كَمَثَلِ الَّذِی اسۡتَوۡقَدَ نَارًا فَلَمَّاۤ اَضَآءَتۡ مَا حَوۡلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ
بِنُوۡرِهِمۡ وَتَرَكَهُمۡ فِیۡ ظُلُمٰتٍ لَّا یُبۡصِرُوۡنَ ○ صُمٌّۢ بُكۡمٌ عُمۡیٌ فَهُمۡ لَا یَرۡجِعُوۡنَ
○ اَوۡ كَصَیِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِیۡهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعۡدٌ وَّبَرۡقٌ یَجۡعَلُوۡنَ اَصَابِعَهُمۡ فِیۡۤ
اٰذَانِهِمۡ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الۡمَوۡتِ وَاللّٰهُ مُحِیۡطٌۢ بِالۡكٰفِرِیۡنَ ○ یَكَادُ الۡبَرۡقُ
یَخۡطَفُ اَبۡصَارَهُمۡ كُلَّمَاۤ اَضَآءَ لَهُمۡ مَّشَوۡا فِیۡهِ ○ وَاِذَاۤ اَظۡلَمَ عَلَیۡهِمۡ قَامُوۡا
وَلَوۡ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمۡعِهِمۡ وَاَبۡصَارِهِمۡ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰی كُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ○

سورہ بقرہ ۱۷ تا ۲۰

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

مَا یَوَدُّ الَّذِیۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ وَلَا الۡمُشۡرِكِیۡنَ اَنۡ یُّنَزَّلَ
عَلَیۡكُمۡ مِّنۡ خَیۡرٍ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ وَاللّٰهُ یَخۡتَصُّ بِرَحۡمَتِهٖ مَنۡ یَّشَآءُ وَاللّٰهُ ذُو الۡفَضۡلِ
الۡعَظِیۡمِ ○ مَا نَنۡسَخۡ مِنۡ اٰیَةٍ اَوۡ نُنۡسِهَا نَاۡتِ بِخَیۡرٍ مِّنۡهَاۤ اَوۡ مِثۡلِهَا اَلَمۡ تَعۡلَمۡ
اَنَّ اللّٰهَ عَلٰی كُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ○ اَلَمۡ تَعۡلَمۡ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ○
وَمَا لَكُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مِنۡ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِیۡرٍ ○ اَمۡ تُرِیۡدُوۡنَ اَنۡ تَسۡـَٔلُوۡا رَسُوۡلَكُمۡ
كَمَا سُئِلَ مُوۡسٰی مِنۡ قَبۡلُ ○ وَمَنۡ یَّتَبَدَّلِ الۡكُفۡرَ بِالۡاِیۡمَانِ فَقَدۡ ضَلَّ سَوَآءَ
السَّبِیۡلِ ○ وَدَّ كَثِیۡرٌ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ لَوۡ یَرُدُّوۡنَكُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ اِیۡمَانِكُمۡ كُفَّارًا
حَسَدًا مِّنۡ عِنۡدِ اَنۡفُسِهِمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ مَا تَبَیَّنَ لَهُمُ الۡحَقُّ فَاعۡفُوۡا وَاصۡفَحُوۡا حَتّٰی
یَاۡتِیَ اللّٰهُ بِاَمۡرِهٖ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰی كُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ○ سورہ بقرہ ۱۰۹۔ ۱۰۵

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ لَا تَاۡخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوۡمٌ لَهٗ مَا فِی
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الۡاَرۡضِ مَنۡ ذَا الَّذِیۡ یَشۡفَعُ عِنۡدَهٗۤ اِلَّا بِاِذۡنِهٖ یَعۡلَمُ مَا بَیۡنَ
اَیۡدِیۡهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡ وَلَا یُحِیۡطُوۡنَ بِشَیۡءٍ مِّنۡ عِلۡمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ كُرۡسِیُّهُ
السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ وَلَا یَـُٔوۡدُهٗ حِفۡظُهُمَا وَهُوَ الۡعَلِیُّ الۡعَظِیۡمُ ○ سورہ بقرہ ۲۵۵

Scanned by CamScanner

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَمۡ یَحۡسُدُوۡنَ النَّاسَ عَلٰی مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖ فَقَدۡ اٰتَیۡنَاۤ اٰلَ اِبۡرٰهِیۡمَ الۡكِتٰبَ وَالۡحِكۡمَةَ وَاٰتَیۡنٰهُمۡ مُّلۡكًا عَظِیۡمًا ○ سورہ نساء :۵۴

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

وَاَخَذَ الَّذِیۡنَ ظَلَمُوا الصَّیۡحَةُ فَاَصۡبَحُوۡا فِیۡ دِیَارِهِمۡ جٰثِمِیۡنَ ○ سورہ یوسف :۶۷

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

وَلَوۡلَاۤ اِذۡ دَخَلۡتَ جَنَّتَكَ قُلۡتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ اِنۡ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنۡكَ مَالًا وَّوَلَدًا ○ سورہ الکھف :۳۹

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

بَلۡ نَقۡذِفُ بِالۡحَقِّ عَلَی الۡبَاطِلِ فَیَدۡمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ وَلَكُمُ الۡوَیۡلُ مِمَّا تَصِفُوۡنَ ○ سورہ الانبیاء :۱۸

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

وَلَقَدۡ خَلَقۡنَا فَوۡقَكُمۡ سَبۡعَ طَرَآئِقَ وَمَا كُنَّا عَنِ الۡخَلۡقِ غٰفِلِیۡنَ ○ سورۃ المؤمنون:۱۷

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

یٰسٓ ○ وَالۡقُرۡاٰنِ الۡحَكِیۡمِ ○ اِنَّكَ لَمِنَ الۡمُرۡسَلِیۡنَ ○ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسۡتَقِیۡمٍ ○ تَنۡزِیۡلَ الۡعَزِیۡزِ الرَّحِیۡمِ ○ لِتُنۡذِرَ قَوۡمًا مَّاۤ اُنۡذِرَ اٰبَآؤُهُمۡ فَهُمۡ غٰفِلُوۡنَ ○ لَقَدۡ حَقَّ الۡقَوۡلُ عَلٰۤی اَكۡثَرِهِمۡ فَهُمۡ لَا یُؤۡمِنُوۡنَ ○ اِنَّا جَعَلۡنَا فِیۡۤ اَعۡنَاقِهِمۡ اَغۡلٰلًا فَهِیَ اِلَی الۡاَذۡقَانِ فَهُمۡ مُّقۡمَحُوۡنَ ○ وَجَعَلۡنَا مِنۡۢ بَیۡنِ اَیۡدِیۡهِمۡ سَدًّا وَّمِنۡ خَلۡفِهِمۡ سَدًّا فَاَغۡشَیۡنٰهُمۡ فَهُمۡ لَا یُبۡصِرُوۡنَ ○ سورہ یٰسین:۱-۹

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَا یَسۡتَوِیۡۤ اَصۡحٰبُ النَّارِ وَاَصۡحٰبُ الۡجَنَّةِ اَصۡحٰبُ الۡجَنَّةِ هُمُ الۡفَآئِزُوۡنَ

Scanned by CamScanner

○ لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ○ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ○ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ○ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○ سورہ الحشر :۲۴۔۲۰

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ○ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ ○ سورۃ الملک :۵۔۴

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَ يَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ○ سورۃ القلم :۵۱

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ○ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ○ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ ○ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ○ سورہ اخلاص

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ○ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ○ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ○ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ○ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ○ سورہ فلق

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ○ مَلِكِ النَّاسِ ○ اِلٰهِ النَّاسِ ○ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ○ الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ ○ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ○ سورہ ناس

Scanned by CamScanner

ब–एहतमाम:

अर्रूक़िया अश्शरईआ सेन्टर

मकान नं. 1337/1338, पोस्ट ऑफिस के पास,
रामगंज चौपड़, जयपुर (राजस्थान)

Mob. 9785254147, 9928160191, 9982445841

Scanned by CamScanner